JREB-2-HI

यीशु: खोज जारी है - भाग २

उद्घोषक: जब यीशु कैसरिया फिलिप्पी में आए, तो उन्होंने अपने चेलों से पूछा, " लोग क्या कहते हें कि मनुष्य का पुत्र कौन है?"

डा क्रेग इवांस: अगर मैं एक सांसारिक इतिहासकार होता और यीशु को बोलते देख रहा होता, तो मैं कहता कि यह व्यक्ति सोचता है कि वह स्वर्ग से आया किसी प्रकार का दूत है।

उद्घोषक: उन्होंने उत्तर दिया, "कुछ लोग कहते हैं, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले, दूसरे कहते हैं एलिय्याह, और कुछ अन्य यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से एक।"

डा एड्विन यामाउची: ऐसे भी कई संकेत हैं जो यीशु को साधारण इंसान की तुलना में अधिक दर्शाते हैं।

उद्घोषक: "तुम क्या कहते हो?" उन्होंने पूछा। " तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूं?"

डॉ डारेल बोक: मुझे लगता है कि आवाज ने यीशु को संबोधित किया: " तुम मेरे प्रिय पुत्र हो, जिससे मैं अधिक प्रसन्न हूं।"

उद्घोषक: शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "आप मसीह हैं, जीवित परमेश्वर के पुत्र।"

आज, यीशु का सवाल इतिहासकारों और धर्मशास्त्रियों, विश्वासियों और अविश्वासियों को एक जैसी चुनौती देता है।कुछ एक ने उनका स्वागत मसीह के रूप में किया, परमेश्वर के पुत्र, जैसा

कि पहली सदी के उनके अनुयायियों ने किया था। दूसरे कुछ कहते हैं कि यीशु ने ना ही कुछ ऐसा कहा और किया जैसा कि सुसमाचारों में अंकित है। फिर भी, यीशु की खोज जारी है।

*****

डॉ जॉन एंकरबर्ग: नाजरेत में अपने अधिकांश जीवन व्यतीत करने के बाद यीशु यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से मिलने के लिए यरदन नदी की ओर बढ़ते हैं। यूहन्ना एक तीक्ष्ण प्रचारक थे, संसार को मन फिराव का संदेश देते, और चेतावनी देते कि अगर वे ऐसा नहीं करते, परमेश्वर का क्रोध शीघ्र उनपर भड़केगा। जब यूहन्ना द्वारा यीशु का बपतिस्मा हुआ, अधिकांश विद्वान मानते हैं कि यह उनके सार्वजनिक सेवकाई को चिन्हित करता है, तब उनकी उम्र लगभग 30 की थी।

यह है वह यरदन नदी जिसमें यूहन्ना के द्वारा यीशु का बपतिस्मा हुआ सु समाचारों के अनुसार। लेकिन कुछ विद्वानों का दावा है कि हमारे पास विरोधाभासी वृतांत है क्योंकि सुसमाचार लेखकों ने यीशु के बपतिस्मा के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला।

मरकुस के अनुसार स्वर्ग से आवाज ने कहा, “तुम मेरे प्रिय पुत्र हो।” (मरकुस १:११) मत्ती के अनुसार स्वर्ग से आवाज ने कहा, “यह मेरा प्रिय पुत्र है।” (मत्ती ३:१७) क्या हम वास्तव में जानते हैं की स्वर्ग की आवाज ने क्या कहा?

डॉ डैरेल बॉक: मुझे लगता है कि आवाज ने यीशु को संबोधित किया : “तुम मेरे प्रिय पुत्र हो और मैं तुमसे बेहद प्रसन्न हू।” “यह”, वे ऐतिहासिक घटना के प्रभाव को प्रस्तुत करने का प्रयास

कर रहे हैं - परमेश्वर ने “यह एक” बताया है जिनके जरिए वे कार्य करने जा रहे हैं। अब, दोनों ही बयान ऐतिहासिक तौर पर खरा और सही है। एक महत्व देता है कि वाक्यांश क्या थे; दूसरा वाक्यांश को बताता है।

डॉ क्रेग ब्लोमबर्ग: लोग काफी सहज थे सारांश को जानकर, सार या संक्षिप्त विवरण को जानकर, हम इसे कहेंगे किसी के भाव या भावार्थ, और मानते थे कि वह पूरी तरह सही है और जो कुछ उन्होने कहा उसके रिकॉर्डिंग का एक बहुत ही उचित तरीका था। सुसमाचारों के बीच का गहरा मतभेद इससे अधिक कुछ भी नहीं है।

डॉ जॉन एंकरबर्ग: यीशु के बपतिस्मा के कुछ समय बाद, हेरोद एंटिपस ने यूहन्ना को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया। मरकुस कहते हैं, “यीशु ने गलील मे आकर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया और कहा, ‘समय पूरा हुआ है और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है।’” यीशु का तात्पर्य क्या था जब वह कहते हैं परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है ?

डॉ डैरेल बॉक: जिसने भी इस पद का इस्तेमाल किया यह कहने के लिए किया की, “एक दिन परमेश्वर इस धरती पर राज करेंगे और अपने संतों की सुध लेंगे।” हमेशा से इसका तात्पर्य यही रहा है। पर इसके चारों ओर अलग-अलग धारणाएं थी कि यह कार्य कैसे करेगा। क्या इसराइल के अपने शत्रुओं को हराने द्वारा? क्या कोई महान उत्कृष्ट शासक आएंगे, अगर कहे तो, ऊपर से - या फिर दोनों ही।

और इसलिए जब यीशु ने इस पद का उपयोग किया, तो लोग मूल रूप से समझ गए कि उनका क्या मतलब था।

डा क्रेग इवांस: देखिए मुझे लगता है यीशु ने परमेश्वर के राज्य को अपने तरह से समझाया क्योंकि उन्हीं के द्वारा यह अमल में लाया जा रहा था। यह यहीं है, आपके मध्य - जब वे दुष्ट आत्मा निकालते या किसी को चंगा करते, यह सबूत है कि परमेश्वर का राज्य मानव परिधि क्षेत्र में शक्तिशाली रूप से प्रगट हुआ है। और यह नया था; लोगों ने ऐसा कुछ पहले नहीं सुना था।

डॉ एन टी राइट: उन्होंने सोचा कि वह एक भविष्यवक्ता है परमेश्वर के राज्य की घोषणा करने वाले। पर इस तर्ज पर मात्र घोषणा करना नहीं कि शायद यह एक दिन या हफ्ते या महीने या साल में हो, पर कहते हुए "यह अभी तुम्हारी नाक के नीचे हो रहा है।" यह उनका भविष्यवाणीय संदेश था और उन्होंने न केवल यह कहा, उन्होंने इसे फसह के प्रतीकात्मक कार्य, चंगाई व ऐसे कई अन्य कार्यों द्वारा किया भी। और इसीलिए वे परेशानी में पड़े, क्योंकि लोगों को यह पसंद नहीं आया।

डॉ जॉन एंकरबर्ग: यीशु के अनुसार, परमेश्वर का राज्य मौजूद था, लेकिन अभी तक पूर्ण नहीं था। उनमें, यह शक्ति के साथ प्रगट हुआ है, पर भविष्य में यह पूरा मुकम्मल होगा।

डॉ बेन विथिंगटन: जब आप कहते हैं, "यदि मैं परमेश्वर की सामर्थ्य से दुष्ट आत्माओं को निकालता हूं तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है," (लूका ११:२०) वे वास्तविक शारीरिक चंगाई की बात कर रहे हैं, एक वास्तविक व्यक्ति जो मुक्त किया गया है, बचाया गया, परमेश्वर के उद्धार के कार्य द्वारा। यहां वास्तविक समय में वास्तविक लोग शामिल हैं। यह सिर्फ तब नहीं होने का जब आप मर कर परमेश्वर के पास जाएंगे। तो, स्पष्ट रूप से, समय और स्लथ मे, एक आयाम पहले ही मौजूद है परमेश्वर के राज्य का, और फिर एक "अब तक नहीं" आयाम भी है भविष्य में परमेश्वर के राज्य का।

डॉ जॉन एंकरबर्ग: यीशु ने यह भी कहा कि परमेश्वर के राज्य में तत्काल प्रवेश उन सभी के लिए उपलब्ध था अपने पापों से मन फिर आएंगे और उनके ऊपर विश्वास लाएंगे।

डॉ क्लेयर पफैन: सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण वह पुरुष के हृदय में परमेश्वर के शासन की बात कर रहे हैं। और दूसरी बात, मानव इतिहास के दूर भविष्य में फिर सांसारिक राज्य भी होगा। लेकिन फिलहाल, परमेश्वर यह चाहते हैं कि वह ब्रह्मांड के सभी वस्तुओं से सबसे अधिक अनियंत्रित चाहिए को अपने अधीन लाऐं, मनुष्य का हृदय।

डॉ जॉन एंकरबर्ग: क्या यीशु ने पर्याप्त जानकारी दी थी, कि अगर राजनीतिक नेता उन्हें सुनते, वे परेशानी में पड़ सकते थे?

डॉ डैरेल बॉक: हां, पर वास्तविकता यह थी कि यीशु इतने शक्तिशाली नाम नहीं थे जिस तरह से धर्मनिरपेक्ष शक्ति को रोमियों के लिए चिंता माना जाता है। उनके पास सेना नहीं थी; तो उस दृष्टिकोण से वे खतरा नहीं थे। वे यहूदी नेतृत्व के लिए अधिक खतरनाक थे। और वह यहूदी नेतृत्व के लिए धमकी का कारण इसलिए बन रहे थे क्योंकि वे फिर से परिभाषित और पुनर्गठित कर रहे थे कि कैसे यहूदी विश्वास का संचलन होना चाहिए। और यह उनके धार्मिक प्राधिकरण पर उनके प्रत्यक्ष नियंत्रण के लिए एक बड़ी चुनौती थी।

डॉ जॉन एंकरबर्ग: यीशु ने सिखाया वे परमेश्वर के राज्य के राजा हैं, और केवल वही जो अपने आपको उन्हें समर्पित करते हैं उन्हें ही प्रविष्टि प्राप्त होगी। साथ ही साथ, उन्होंने बार-बार अपने आप को मनुष्य का पुत्र भी कहा, कभी-कभी भविष्यवक्ता दानिय्येल के दिव्य पूर्ववर्ती व्यक्ति के साथ भी खुद को जोडा जिसे परमेश्वर द्वारा पृथ्वी पर अधिकार और एक सार्वकालिक राज्य दिया गया है।

डा क्रेग इवांस: अगर मैं एक सांसारिक इतिहासकार होता और यीशु को बोलते देख रहा होता, तो मैं कहता कि यह व्यक्ति सोचता है कि वह स्वर्ग से आया किसी प्रकार का दूत है। इस व्यक्ति को लगता है की दानिएल ७ में वर्णित व्यक्ति यही है जिससे राज्य और अधिकार दिया गया है, और अब पृथ्वी पर वह इसे ला रहा है।" सबूत उसी दिशा में इशारा करेंगे

डॉ जॉन एंकरबर्ग: लेकिन कुछ विद्वानों का दावा है कि परमेश्वर के राज्य के बारे में यीशु की शिक्षा अद्वितीय नहीं थी, कि यीशु, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और कुमरान के एसेनस सभी एक ही साम्राज्य के संदेश का प्रचार कर रहे थे।

इस सवाल की जांच करने, हम यरदन नदी छोड़ मृत सागर के उत्तर-पश्चिमी तट पर कुमरान नामक जगह पर पहुँचे। समुदाय के खंडहरों के पीछे, आप अभी भी पहाड़ों में गुफाओं को देख सकते हैं जहां १९४७ में एक बेडौइन चरवाहे ने कुछ प्राचीन पांडुलिपियों को पाया था। उस प्रारंभिक खोज के बाद, अन्य गुफाओं की खोज की गई और विद्वान जो कुछ यीशु के समय के दौरान यहूदी सोच और अभ्यास के बारे में जानते थे उसमे मृत सागर स्क्रॉल कि वजह से अब क्रांतिकारी बदलाव आया है।

डॉ स्टीफन पफैन: यह है गुफा ४ ए और ४ बी, जिनमें स्क्रॉल का सबसे बड़ा जखीरा पाया गया था। १९५२ के सितंबर में बेडौइन्स का एक समूह जो गुफा के नीचे अंदर गया था और वहाँ नीचे उन्हे खंडित स्थिति में 800 स्क्रॉल मिले।

डॉ जॉन एंकरबर्ग: विद्वानों को अब एहसास हुआ है कि उनके पास भी उसी तरह की स्क्रॉल है जिस तरह की यीशु ने कफरनहूंम की आराधनालय मे पढी होगी।

डॉ स्टीफन पफैन: एक बिंदु था जहां एक बेडौइन इस तरह एक जगह में नीचे पहुंचा और खोला और पाया, पहली बार हम देख सकते थे, वास्तव में उन्हीं के समान स्क्रॉल जिन्हें वे पढ़ते थे और जो उनके पास थे, पहली शताब्दी के उन स्क्रॉल के समकालीन जिन्हें यीशु और उनके शिष्यों ने पढा़ होगा।

डॉ वेस्टन फील्ड: इस जगह के दस्तावेज हमें नए नियम का बेहतर संदर्भ देते हैं जो हमारे पास उनके मिलने से पहले नहीं थे और इसके अलावा हमारे पास कहीं और है भी नहीं।

डॉ जॉन एंकरबर्ग: क्यों ?

डॉ वेस्टन फील्ड: क्योंकि दूसरे मंदिर काल से यीशु के जीवनकाल से पहले और उसके बाद के वर्षों में हमारे पास कुमरान के दस्तावेजों को छोड़कर कोई अन्य यहूदी दस्तावेज नहीं है, जिसे दिनांकित किया जा सकता है और जिसे उनके जीवन के साथ समकालीन माना जा सकता है।

डॉ जॉन एंकरबर्ग: मृत सागर स्क्रॉल के परिणामस्वरूप, अब सफलतापूर्वक यह तर्क नहीं दिया जा सकता कि चार सुसमाचारों में वर्णित घटनाऐं और मान्यताएं सदियों बाद मसीही धर्मशास्त्रियों का एक उत्पाद है। स्क्रॉल हमें दिखाता हैं कई ऐसी शब्दावलियां जिनका उपयोग नए नियम में सिर्फ एक बार ही हुआ है पर वे वास्तव में उस समय की यहूदी शब्दावलीयों का हिस्सा थे।

डॉ क्लेयर पफैन: जिस बात को आधुनिक विद्वानों को स्वीकारने में परेशानी थी, वह यीशु का वह दावा था जिसके अनुसार वे मरे हुओं का पुनरुत्थान करेंगे और मसीह ठहरेंगे, क्योंकि उस समय तक उन्हे इल्म नही था कि यहूदी लेखकों में कहीं भी यह उल्लेखित था की मसीहा ने मरे हुए को जिलाया, जब तक उन्हें एक और पांडुलिपि नहीं मिली कुमरन के गुफा 4 में, संख्या

521, जिसे मेसिअनिक अपोकलीप्स कहा जाता है। और इस लेख में, कहा गया है कि जब मसीहा आएंगे, वे मरे हुए को जिलाएंगे। और यह पहली शताब्दी ईसापूर्व से एक यहूदी लेखन है, जो यीशु के जन्म से पहले लिखा गया था, जो एक मसीहा के लिए यहूदी प्रत्याशा को दर्शाता है, जिसमें मरे हुए को जिलाने की शक्ति होगी, कुछ ऐसा जिसका दावा यीशु ने अपनी मसीही समरूपता के सबूत के रूप में किया था।

डॉ जॉन एंकरबर्ग: कुमरन के स्क्रॉल से, विद्वानों ने यह भी समझा कि अगर कोई कुमरान समुदाय में शामिल होना चाहे, उसे दैनिक शुद्धिकरण स्नान में शामिल होने से पहले एक पूरे वर्ष का इंतजार करना पडता था, और समुदाय का पूर्ण सदस्य बनने से पहले तीन साल तक का इंतजार करना पडता था।

डॉ स्टीफन पफैन: वे पश्चाताप के बपतिस्मा मे अग्रसर होने वाले पहले थे, जहां परमेश्वर के प्रति पवित्रता के हर कार्य से पहले हृदय मे एक परिप्रेक्ष्य या पश्चाताप किया जाना था, यह सुनिश्चित करने के लिए कि यह पाप से मुक्त था। और यह जारी रहा यूहन्ना के बपतिस्मा में भी, यकीनन।

डॉ जॉन एंकरबर्ग: क्या यह यहां पर बपतिस्मा कुंड है?

डॉ स्टीफन पफैन: और आप देख सकते हैं कि यहाँ कई कुंड हैं जो डुबकि के कुंड, बपतिस्मा कुंड हैं, जिसमें एसेनस को खुद को लाना होता था ... हृदय को जांचने के लिए और फिर डुबकी लेनी पड़ती थी कि परमेश्वर के सामने शुद्ध ठहरें ताकि वे सक्रिय रूप से भाग ले सकें सामुदायिक मामलों में।

डॉ जॉन एंकरबर्ग: अब यीशु की शिक्षाओं को यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और एसेनस की शिक्षाओं से तुलना करें। एसेनस समुदाय में प्रविष्टि के लिए एक लंबी प्रतीक्षा अवधि और दैनिक शुद्धिकरण स्नान की आवश्यकता होती थी। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले, लोगों के पश्चाताप के कृत्य देखना चाहते थे बपतिस्मा देने से पहले। पर यीशु ने उन्हें तुरंत राज्य में सम्मिलित किया, उन पर विश्वास लाते क्षण ही।

डॉ क्लेयर पफैन: यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले, यीशु और एसेनिस शायद एक ही समूह का हिस्सा नहीं थे, पर निसंदेह वे एक दूसरे के बारे में जानते थे, और उनके द्वारा दी गई शिक्षाओं को भी। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और यीशु के बीच संबंध और जुड़ाव स्पष्ट है। और यह जुड़ाव इतने प्रगाढ़ थे की चारों सुसमाचारों और प्रेरितों के काम की पुस्तक को इसकी गहराई में जाना पड़ा इस रिश्ते को बेहतर समझाने के लिए।

डॉ एन टी राइट: यूहन्ना बपतिस्मा अलग था। एसेनस के नियमित रूप से शुद्धिकरण के सामान नहीं था। और यूहन्ना आने वाले मसीहा की ओर इशारा कर रहे थे, ना कि एक और धार्मिकता के शिक्षक की ओर जो कि आपको और अधिक कठिनतम तोराह सिखाए। तो ऐसे यूहन्ना और एसेनस में फर्क है। पर मुझे लगता है जब कभी किसी एसेनस ने यूहन्ना को देखा होगा, कहा होगा, “यही हें वह जिनका हम इंतजार कर रहे हैं।” और फिर, मुझे लगता है कई एसेनस यीशु के पास गए होंगे। उनके सामने एक ऐसा मौका आया होगा मानो उनका कोई कज़न मिल गया हो जिन्हें वह नहीं जानते थे कि वह है, रूप बहुत कुछ परिवार की तरह ही दिखता है, पर कार्य बिल्कुल अलग तरह से करता है।

डॉ क्लेयर पफैन: एसेनिस इसे नियंत्रित, अंदरूनी, शुद्ध, पवित्र और समयोचित रखना चाहते हैं। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले एक कदम आगे उठाते हैं और समुदाय के बाहर के लोगों से बात

करना शुरू करते हैं कि उन्हें आने वाले राज्य का सुसमाचार सुनाया जाए। लेकिन पश्चाताप और राज्य के आने का संदेश परमेश्वर की चमत्कारी शक्ति के विस्तार के साथ मिलकर केवल यीशु में ही है, जो की गवाही है, या इस तथ्य की तस्दीक करती है की राज्य उन्हीं के द्वारा प्रकट किया जाएगा।

डॉ जॉन एंकरबर्ग: इससे सवाल उठता है, "क्या विद्वान वास्तव में विश्वास करते हैं कि यीशु ने चमत्कार किए?"

****

डॉ जॉन एंकरबर्ग: यूहन्ना अपने सुसमाचार में लिखते हैं : “और एक बड़ी भीड़ उनके पीछे हो ली क्योंकि जो आश्चर्यकर्म वे बीमारों पर दिखाते थे वे उनको देखते थे।” (लुका ६:२)

अब, सुसमाचार के लेखकों ने यीशु को कई अलौकिक चमत्कार करते हुए चित्रित किया, जैसे कि अंधे को ठीक करना, पानी को दाखरस में बदलना, लाजर को मरे हुओं में से जिलाना, और केवल कुछ रोटी और मछली के साथ ५००० लोगों को खिलाना। लेकिन क्या यह कहा जा सकता है कि उनके बारे में दर्ज चमत्कार यीशु ने वास्तव में किए?

डॉ एन टी राइट: यह यीशु पर समकालीन इतिहास के उल्लेखनीय बातों में से एक है कि वर्तमान में यीशु के विद्वानों में अधिकतर, जिनमें से कई मसीही विश्वासि नहीं हैं, इस बात से सहमत हैं कि यीशु ने उल्लेखनीय चमत्कार किये और यह एक खास कारण है कि क्यों वे इतनी बड़ी भीड़ को और अनुयायियों को आकर्षित कर पाए। सिर्फ उनकी शिक्षाएं ही रोमांचक नहीं थे,

हालांकि वे थे। वे इसलिए आए क्योंकि चीजें हो रही थीं - एक बुजुर्ग स्त्री जो 50 साल से बीमार है, “उन्हें ले आओ यीशु उन्हें चंगा कर देंगे।” जानते हैं ? इसने भीड़ को खींचा और आज भी खींचेंगे अगर यह आज वेस्टमिंस्टर में हुआ तो।

डॉ गैरी हबर्मस: अधिकांश विद्वान, बड़ी संख्या में, जरूर यह कहेंगे की यीशु ने चंगाई के चमत्कार तो किए ही हैं। यीशु के चमत्कार सभी सुसमाचारों में प्रमाणित है

डॉ एमी-जिल लेविन: मैं मानती हूं यीशु चमत्कारी थे, कई अन्य चमत्कारीयों के साथ जिन्हे हम यहूदी और पेगन विश्वास के पाते हैं। क्या उनके चमत्कारों को कहा गया कि ये परमेश्वर कि ओर से ? निश्चित रूप से कुछ लोगों द्वारा, लेकिन जैसा कि हम सुसमाचार में भी देखते हैं, कुछ लोग कहते थे, “ओह, हाँ, हम मानते हैं कि उन्होंने चमत्कार किए हैं, लेकिन वह उन्हें शैतान की शक्ति से करते हैं।” **चमत्कार खुद ही निर्विवाद है।**

डॉ जॉन एंकरबर्ग: अब भी ऐसे कुछ विद्वान और इतिहासकार हैं जो यह नहीं मानते कि यीशु ने चमत्कार किए।

डॉ विलियम लेन क्रेग: उदाहरण के लिए, सदस्य, यीशु सेमिनार के जो नए नियम के दृष्टिकोण में संदेह रखते हैं, ने अपने कई पूर्वानुमानों को काफी स्पष्ट कर दिया है। उन्होंने उन्हें सूचीबद्ध भी किया है, उदाहरण के लिए, तथाकथित पांच सुसमाचारों के उनके संस्करण के प्रस्तावना में। और उस सेमिनार के लोगों के अनुसार, ऐतिहासिक यीशु पर विद्वतापूर्ण जांच का पहला स्तंभ है प्रकृतिवाद का पूर्वाग्रह; अर्थात यह कहना, कि चमत्कार नहीं होते हैं।

डॉ जॉन एंकरबर्ग: ध्यान देने योग्य बात यह है कि ऐतिहासिक प्रमाण स्वयं ही प्राकृतिक धारणा की ओर इशारा करते हैं कि चमत्कार कभी नहीं होते हैं यह सही नहीं है। यह सबूत क्या

है? सत्य यह है कि सांसारिक इतिहासकारों ने यीशु को चमत्कार करने वाले जन कहकर वर्णित किया है। इन लेखकों पर कोई दार्शनिक कुल्हाड़ी नहीं लटक रही थी, इसलिए अगर वास्तव में उन्हे उनके स्रोतों के माध्यम से यह ज्ञात न होता कि यीशु चमत्कारिक कार्य करते है, उनके पास उनके बारे में वर्णन करने का कोई कारण नहीं था। इसके उदाहरण हैं यूसुफस, यहूदी रब्बी बेबीलोनियन तलमूद में, जिन्होंने अपने प्राचीन यहूदी लेखों में, यीशु को चमत्कार कर्ता के रूप में उदधृत किया हैं।

डॉ बेन विथिंगटन: अब, मेरे लिए रोचक यह बात है कि केवल नया नियम ही नही है जो यीशु के चमत्कारिक होने का दावा करता। बाद में यहूदी परंपराओं ने, जिन्होंने अस्वीकार किया कि यीशु मसीहा थे, यह भी प्रमाणित करते हैं कि यीशु ने चमत्कार किए थे। यह भी सच है कि बाद के कुछ ग्रीको-रोमन स्रोत भी यह प्रमाणित करते हैं कि यीशु एक चमत्कार कर्ता थे। और फिर, यकीनन, हमारे पास इसी मुद्दे पर जोसेफस की प्रसिद्ध गवाही भी है। तो, क्या हमारे पास विश्वसनीय साक्ष्य हैं कि यीशु ने चमत्कार किए? मुझे लगता है बिल्कुल हैं।

डॉ डैरेल बॉक: अगर आप विषय पर यह मान कर आते हैं की चमत्कार नहीं हो सकते, मान कर चलिए आपको एक दुविधा मिल गयी है। आप इन वचनो को पढ़ते हैं यीशु ने रोटी को आशीषित किया या अंधे को चंगा किया, और आपको जो हो रहा है इसे लेकर किसी ना किसी प्रकार के स्पष्टीकरण के साथ सामने आना होगा। दरअसल, अंधे की चंगाई दिलचस्प है क्योंकि पुराने नियम में, अंधे लोग चंगे नहीं हुए। किसी ने भी वैसा चमत्कार नहीं किया। और यह भ्रमित करने के लिए आसान नहीं है।

डॉ विलियम लेन क्रेग: इन सबूतों को देखने से पहले ही, कि यह हुए या नहीं, खारिज करना एक बहुत ही बुरी कार्यप्रणाली होगी। अन्यथा, हम केवल दार्शनिक पूर्वनिश्चितता के आधार पर वास्तविक परिकल्पना का फैसला कर सकते हैं जिसके लिए हमारे पास कोई औचित्य नहीं है।

डॉ गैरी हबर्मस: मेरे लिए, प्राकृतिक सिद्धांत, परिभाषा के अनुसार, रिक्त स्थान की पूर्ति है। यह प्राकृतिक सिद्धांत नहीं है : "अरे, तुम मसीही तो मूर्ख हो! इस तरह की चीजें नहीं होती। अपने जीवन में मैंने चमत्कार नहीं देखे और यीशु मुर्दों से जिलाए नहीं गए।" प्राकृतिक सिद्धांत कहेगा, "नहीं। मैं बताता हूं। यीशु मुर्दों से जिलाए नहीं गए। वास्तव में हुआ यूँ कि———— (रिक्त स्थान की पूर्ति)।" अब, मेरे लिए, एक संशयवादी व्यक्ति का एक प्राकृतिक सिद्धांत तब होगा जब वह उस रिक्त स्थान को भरने का फैसला करेगा। वे इन तथ्यों को लेंगे और वैकल्पिक व्याख्या देंगे।

डॉ जॉन एनकरबर्ग: अब, चमत्कारों के बारे में इस पर विचार करें। मनोचिकित्सा, वैद्यकशास्त्र, और विज्ञान से तथ्य, सबूत की आपूर्ति कर रहे हैं जो संकेत देते लगते हैं कि आज हमारी दुनिया में चमत्कार हो रहे हैं।

डॉ गैरी हबर्मस: मुझे लगता है कि नए नियम में चमत्कारों के पक्ष में सातवीं टाई-इन यह है कि कुछ कठिन डेटा हैं जो मुझे लगता है कि उनकी व्याख्या करना मुश्किल है। मैं मार्कस बोर्ग के बारे में सोचता हूं जो यीशु पर अपनी एक पुस्तक में रिपोर्ट करते है कि आज या हाल ही में मनोचिकित्सकों की एक टीम थी जो सामान्य वैज्ञानिक माध्यमों द्वारा कुछ दुष्ट आत्मा ग्रस्त मामलों की व्याख्या नहीं कर पाए। मैं सैन फ्रांसिस्को में लगभग ४०० दिल के रोगियों के साथ एक डबल-ब्लाइंड प्रयोग का भी उल्लेख करता हूं, जहां उनकी २६ श्रेणियों में निगरानी की गई थी और जिनके लिए प्रार्थना की गई थी, वे सांख्यिकीय रूप से बेहतर थे, २६ श्रेणियों में से २१

में सांख्यिकीय रूप से बेहतर थे। और क्योंकि प्रयोग अच्छी तरह से किया गया था, यह एक सांसारिक पत्रिका, द सदर्न जर्नल ऑफ़ मेडिसिन में प्रकाशित हुआ था।

तो, अगर आप आज कुछ चीजें देखते हैं, शायद आप यह नहीं कह सकते, “ओह, हाँ। वहां एक चमत्कार है!” “लेकिन अगर यह आपको थोड़ा आश्चर्यचकित करता है, तो मुझे कहना है, क्या हम उन चीजों की निंदा करने के लिए इतनी जल्दी कर सकते हैं जिन्हे यीशु ने पहली शताब्दी में किया?

डॉ विलियम लेन क्रेग: और यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि आधुनिक विज्ञान में, उदाहरण के लिए, भौतिकी में, वैज्ञानिक वास्तविकताओं के बारे में बात करने के लिए तैयार हैं जो वास्तव में आध्यात्मिक स्वरूप रखते हैं - वास्तविकताएं जो हमारे स्थानिक लौकिक आयाम से परे हैं; वास्तविकताओं जिन्हें हम सीधे नहीं समझ सकते हैं या जानते हैं, लेकिन हम निश्चित रूप से अनुमान लगा सकते हैं, जैसे वे थे, ब्रह्मांड में उत्थान के मार्ग सूचक इसके बढकर कुछ करने के लिए।

डॉ जॉन एनकरबर्ग: कई वैज्ञानिक अब मानते हैं कि बिग बैंग सिद्धांत के सबूत ब्रह्मांड के सभी पदार्थों, ऊर्जा, और यहां तक कि अंतरिक्ष-समय आयामों के एक साथ शुरुआत की ओर इशारा करते हैं। यह सबूत उन्हें उस कारण के स्थान पर ले गया की बाहरी ब्रह्मांड पदार्थ, ऊर्जा और अंतरिक्ष से स्वतंत्र है। यह सबूत परमेश्वर के अस्तित्व की मजबूत संभावना को व्यक्त करता हैं।

डॉ विलियम लेन क्रेग: एक सादृश्य देने के लिए, ब्रह्मांड विज्ञान के क्षेत्र में सबूत बताते हैं कि ब्रह्मांड सीमित समय में किसी बिंदु पर “बिग बैंग” नामक एक महान विस्फोट से अस्तित्व

में आया। और कई भौतिकवादी यह कहने से नहीं हिचकिचाते कि उस घटना के लिए ब्रह्मांड के एक उत्कृष्ट निर्माता और अभीकर्ता के अस्तित्व की आवश्यकता है जो इसे होने दें। अब, जब हम नासरत के यीशु के जीवन और सेवकाई पर आते हैं, क्या ऐसा हो सकता है कि इस व्यक्ति ने नाटकीय और चमत्कारिक तरीके से इतिहास में हस्तक्षेप किया जैसा कि यीशु का दावा है? क्या हम में कम से कम उन दावों की जांच के लिए खुलापन नहीं होना चाहिए?

डॉ जॉन एनकरबर्ग : चूंकि सुसमाचार में कई ऐतिहासिक साक्ष्य हैं कि यीशु ने चमत्कार किए, और चूंकि गैर-मसीहि सांसारिक स्रोतों से भी ऐसे सबूत हैं कि यीशु एक चमत्कार कर्ता थे, और मनोचिकित्सा, वैद्यकशास्त्र और विज्ञान भी, अब इस बात की तस्दीक करते हैं कि जो कुछ हम जानते हैं उससे भी आगे बहुत कुछ है, क्या सबूतों की जांच से पहले चमत्कारिक को खारिज करना कतई न्यायसंगत है?

डॉ विलियम लेन क्रेग: शायद यीशु के जीवन के ये चमत्कार ब्रह्मांड से परे कुछ उत्कृष्ट के संकेत हैं, नासरत के यीशु के जीवन और सेवकाई में नाटकीय तरीके से कुछ और अधिक करीब। और मुझे ऐसा लगता है कि खुले दिमागी लोगों के रूप में, हम सबूतों को देखे बिना इसे पहले से खारिज नहीं कर सकते हैं।

डॉ जॉन एनकरबर्ग: तो, यह मानते हुए कि अच्छे ऐतिहासिक प्रमाण हैं कि यीशु ने चमत्कार किए, वे क्या कहते हैं कि वे कौन हैं? इससे महत्वपूर्ण, यीशु ने अपने बारे में क्या कहा? क्या उन्होंने कभी परमेश्वर होने का दावा किया था? आगे हम उस पर चर्चा करेंगे।

****

हमारे टीवी प्रोग्राम देखने के लिए मुफ्त में डाऊनलोड कीजिए जॉन एन्करबर्ग ाो एप

"घ्द्धठ्ठन्न् द्यद्द ठ्ठड़ड़ड्ढद्ग्रद्य ख्ड्ढद्मद्वद्म क्ण्द्धत्द्मद्य" ॠ ख्ॠद्मण्द्दध्र्.द्दद्धढ़

@JAshow.org

क्द्दद्रन्द्धत्ढ़ण्द्य **2001** ॠच्ङक्ष्